

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 2, अमेरिका में प्यूरिटनवाद और रोजर विलियम्स

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 2 है, अमेरिका में प्यूरिटनवाद और रोजर विलियम्स।

हम E पर आ गए हैं, प्यूरिटनवाद का पतन, और मैं आपको बस यह याद दिलाना चाहता हूँ कि यह सब किस बारे में था।

फिर हम प्यूरिटन के योगदानों पर नज़र डालेंगे, और फिर हम प्यूरिटन धर्मशास्त्र के कुछ पहलुओं पर नज़र डालना चाहेंगे जो उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। तो, हम प्यूरिटनवाद के पतन पर पहुँच गए हैं। अब, हमने उल्लेख किया है, मैं यहाँ आगे बढ़ूँगा, हमने उल्लेख किया है कि पहले क्या आता है, धार्मिक उत्साह की कमी या धन की वृद्धि, जो पहले आया।

हमने पिछले शुक्रवार को अपने समय के अंत में इस पर चर्चा की। और आप वास्तव में नहीं बता सकते। यह कहना मुश्किल है कि पहले कौन आया, लेकिन प्यूरिटन ने शुरू में पैसा कमाया क्योंकि वे बहुत मितव्ययी थे। शुरुआती प्यूरिटन, पहली पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी, अपने पैसे के बारे में बहुत सावधान थे, और उन्होंने अपना पैसा वापस अपने चर्चों और अपने व्यवसायों में लगा दिया।

लेकिन तीसरी पीढ़ी, चौथी पीढ़ी और पांचवीं पीढ़ी ने पैसे का इस्तेमाल खुद पर करना शुरू कर दिया, अपने खूबसूरत घर बनवाए, जैसे कि सलेम में चेस्टनट स्ट्रीट पर, और वाकई खूबसूरत औपनिवेशिक चर्च बनवाए, जो पहले प्यूरिटन के मामले में सच नहीं था। इसलिए, उन्होंने अपना पैसा खुद पर खर्च करना शुरू कर दिया। धन में हुई इस वृद्धि के कारण धार्मिक उत्साह में कमी आई।

आप अपने लिए जीना शुरू कर देते हैं, और आप पहले प्यूरिटन के उस धार्मिक उत्साह को खो देते हैं जो मसीह को दुनिया में और दुनिया को मसीह के पास लाना चाहते थे। या यह दूसरे तरीके से काम करता है? क्या उन्होंने अपना धार्मिक उत्साह खोना शुरू कर दिया, और क्योंकि उन्होंने अपना धार्मिक उत्साह खो दिया, क्या उन्होंने अपने पैसे को खुद में वापस डालने का फैसला किया? किस तरह? खैर, मुझे नहीं पता। मुझे कोई अंदाजा नहीं है।

लेकिन हम जानते हैं कि प्यूरिटनवाद में गिरावट आई है। मेरे पास वह व्यवसाय था; मैं आपको यह दिखाना चाहता था, लेकिन वह व्यवसाय पैसा कमाने और मितव्ययी होने का था और उसे व्यवसाय में, चर्च में वापस डालना था। आप में से कुछ लोगों ने मैक्स वेबर की पुस्तक, प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म पढ़ी होगी।

आपमें से कितने लोगों ने वह किताब पढ़ी है? क्या आपने इसे किसी कोर्स के लिए पढ़ा है? ठीक है, यह ऐसी किताब है जिसे आप अपनी गर्मियों की पढ़ने की सूची में शामिल करना चाहेंगे: प्रोटेस्टेंट एथिक्स एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म। जब वह इस किताब में प्यूरिटन्स के बारे में बात करते हैं, तो वह उन प्यूरिटन्स के बारे में बात करते हैं जिन्हें रोमन कैथोलिक धर्म का मठवाद पसंद नहीं था, इस दुनिया से दूर हो जाना। हम बाद में इसका भी जिक्र करेंगे।

लेकिन उन्होंने बहुत ही तपस्वी जीवन जिया, और वेबर इसे सांसारिक तप कहते हैं। इसलिए उन्होंने इस दुनिया में ईसाई जीवन जिया, लेकिन बहुत ही तपस्वी, बहुत अनुशासित तरीके से। बेशक मठवासी तरीके से नहीं, बल्कि बहुत ही अनुशासित तरीके से।

और यह सांसारिक तपस्या, यह अनुशासन, यह अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीना, और व्यवसाय और चर्च में पैसा लगाना था। यह सांसारिक तपस्या ही थी जिसने इन लोगों को वह धन अर्जित करने में मदद की जो उन्होंने अर्जित किया। मुझे नहीं पता कि प्यूरिटनवाद के पतन के बारे में हम और कुछ कहना चाहते हैं या नहीं।

अब, जब भी कोई धार्मिक समूह कमजोर होता है, तो उसकी जगह लेने के लिए कुछ न कुछ होना ही चाहिए। हम इसे पाठ्यक्रम में बहुत देखेंगे। पेंडुलम एक से दूसरे की ओर झूलने वाला है।

ठीक है, तो चलिए प्यूरिटनवाद के योगदानों और प्यूरिटनवाद द्वारा किए गए कुछ योगदानों पर चलते हैं। ठीक है, एक तो निश्चित रूप से है, और यहाँ, ये योगदान सिर्फ धार्मिक योगदान नहीं हैं, बल्कि व्यापक संस्कृति के लिए सांस्कृतिक योगदान भी हैं। इसलिए, वे सिर्फ शब्द के संकीर्ण अर्थ में धार्मिक नहीं हैं, बल्कि उनमें से एक है वैध सरकार के प्रति सम्मान।

प्यूरिटन निश्चित रूप से वैध सरकार के प्रति सम्मान रखते थे। मेफ्लावर समझौते में आपने जो देखा वह उन लोगों द्वारा किया गया था जो पहले से ही अलगाववादी थे; वे तकनीकी रूप से प्यूरिटन नहीं थे, वे अलगाववादी थे। वे पहले से ही एंग्लिकन चर्च से स्वतंत्र हो चुके थे।

लेकिन आपने मेफ्लावर समझौते में भी यही बात देखी, वैध सरकार के प्रति सम्मान, एक समुदाय के रूप में खुद को वैध तरीके से व्यवस्थित करना, जिसमें नागरिक एक दूसरे के साथ किए जा रहे अनुबंध के नियमों का पालन करने जा रहे हैं। तो आप देखते हैं कि उपयोगी काम का मूल्य, निश्चित रूप से, प्यूरिटनवाद के स्थायी योगदान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम अभी भी, जैसा कि मैं समझता हूँ, अमेरिकी दुनिया में किसी और की तुलना में अधिक मेहनत करते हैं।

और हमें इस तरह की कार्य नीति कहां से मिली? हां, निश्चित रूप से, आंशिक रूप से, यह प्यूरिटन के उपयोगी कार्य के मूल्य से आता है। नागरिक भागीदारी और जिम्मेदारी अमेरिकी सांस्कृतिक जीवन में समाहित है। और यह कहां से आया? आंशिक रूप से, निश्चित रूप से, प्यूरिटन से भी।

इसलिए, शिक्षा के लिए चिंता का विषय और इसका एक अच्छा उदाहरण हार्वर्ड विश्वविद्यालय होगा, जिसकी स्थापना 1636 में हुई थी। अब, याद रखें, प्यूरिटन्स का विशाल आव्रजन 1628 तक

शुरू नहीं हुआ था। इसलिए, 1636 में, हमें हार्वर्ड विश्वविद्यालय की स्थापना पहले ही मिल जाती है।

जॉन हार्वर्ड ने मूल रूप से हार्वर्ड यूनिवर्सिटी शुरू करने के लिए अपनी लाइब्रेरी दे दी थी। जब भी मैं हार्वर्ड के बारे में बात करता हूँ, हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे क्योंकि हम हार्वर्ड के विकास को देखना चाहते हैं। इसलिए, हम यहाँ इसका उल्लेख करते हैं।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी का आदर्श वाक्य क्या है? और मुझे सावधान रहना होगा कि मैं इस स्क्रीन के सामने न आऊँ क्योंकि डॉ. हिल्डेब्रांट इस पर बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन मुझे सावधान रहना होगा कि मैं स्क्रीन के सामने न खड़ा रहूँ। ठीक है, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी का आदर्श वाक्य क्या है? वेरिटास।

वेरिटास का मतलब है सत्य। तो यही हार्वर्ड का आदर्श वाक्य है। यह टी-शर्ट और स्वेटशर्ट और कैप और हर चीज़ पर लिखा है।

वेरिटास। यह हार्वर्ड का आदर्श वाक्य है। बहुत दिलचस्प है।

यह दिलचस्प है कि यह हार्वर्ड का मूल आदर्श वाक्य नहीं था। क्या किसी को पता है कि हार्वर्ड का मूल आदर्श वाक्य क्या था? हाँ। वेरिटास इन क्रिस्टो एट एकलेसियम।

मसीह और चर्च में सत्य। 1636 में जब हार्वर्ड विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी, तब यही इसका आदर्श वाक्य था। अब, जब यह लगभग यूनिटेरियन बन गया, तो दो सौ साल बाद, इसने आदर्श वाक्य से मसीह और चर्च में सत्य को हटा दिया।

और इसलिए, आज भी यह आदर्श वाक्य सत्य ही है। लेकिन प्यूरिटन कभी भी हार्वर्ड की स्थापना सिर्फ सत्य के आदर्श वाक्य के साथ नहीं करते। यह हमेशा मसीह और चर्च में सत्य है।

इसलिए, शिक्षा के लिए वास्तविक चिंता है। जैसे-जैसे पाठ्यक्रम आगे बढ़ेगा, हम इसे बहुत देखेंगे। तब, एक भावना थी कि राष्ट्र, ईश्वरीय मार्गदर्शन के तहत, दुनिया के लिए एक विशेष मिशन रखता है।

एस्क्यू और पेराड वास्तव में इस पर काफी चर्चा करते हैं। लेकिन ईश्वरीय मार्गदर्शन, दुनिया के लिए एक विशेष मिशन। इसे अंततः एक व्यापक जाल में डाला जाएगा और इसे अमेरिकी असाधारणता कहा जाएगा।

इससे अमेरिकी असाधारणता का कारोबार शुरू हो जाएगा। यानी अमेरिका एक असाधारण जगह है और दुनिया के लिए एक आदर्श वाक्य हो सकता है। हालांकि, अमेरिकी असाधारणता शायद उस असाधारणता में कोई धार्मिक घटक न देखे।

जबकि प्यूरिटन ने, निश्चित रूप से, ऐसा किया। इसलिए, हम ईश्वरीय मार्गदर्शन के अधीन एक राष्ट्र हैं जिसका विश्व के लिए एक विशेष मिशन है। और फिर अंततः अगली शताब्दियों में कई और सामाजिक सुधार आंदोलनों के लिए धार्मिक पृष्ठभूमि प्रदान की।

और यह भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इसलिए, 18वीं सदी में इन आंदोलनों को समझना मुश्किल है, पहला महान जागरण। 19वीं सदी में परिमित पुनरुद्धार।

20वीं सदी में, इवेंजेलिकलिज्म नामक आंदोलन। इन आंदोलनों को समझना मुश्किल है जो इतने मजबूत थे और सामाजिक सुधार पर अधिक ध्यान केंद्रित करते थे अगर हम यह नहीं समझते कि वे प्यूरिटन पर आधारित थे। इसलिए, हम यह देखने जा रहे हैं कि प्यूरिटन ने किस तरह से दीर्घकालिक योगदान दिया है।

तो ये प्यूरिटन्स के कुछ योगदान हैं। एस्क्यू और पेसार्ड भी इनसे निपटते हैं। तो, हम दोनों के बीच, मुझे उम्मीद है कि इससे मदद मिली होगी।

प्यूरिटन के योगदान के बारे में कोई सवाल? हाँ। वे ईश्वरीय मार्गदर्शन के अधीन थे और उनका दुनिया के लिए एक विशेष मिशन था। लेकिन यह अमेरिकी सार्वजनिक जीवन की एक व्यापक धारणा में विकसित हुआ जिसे अमेरिकी अपवादवाद कहा जाता है।

व्यापक लेबल अमेरिकी असाधारणवाद है। इसलिए, 18वीं सदी, 19वीं सदी, 20वीं सदी और हमारी सदी में ऐसे लोग आए हैं जो मानते हैं कि अमेरिका का दुनिया में एक विशेष स्थान है जो सामुदायिक जीवन को किस तरह का मॉडल बनाता है। हालाँकि, अमेरिकी असाधारणवाद इसे किसी धार्मिक आधार पर आधारित करने की कोशिश नहीं कर सकता है, जैसा कि प्यूरिटन ने किया था।

तो अमेरिकी अपवादवाद दुनिया के लिए एक विशेष मिशन की इस प्यूरिटन समझ को आगे बढ़ा रहा है, लेकिन प्यूरिटनवाद के सभी धार्मिक आधारों के बिना। और हम पाठ्यक्रम में आगे बढ़ने के साथ अमेरिकी अपवादवाद को देखेंगे। अमेरिका के व्यापक सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में प्यूरिटनवाद के इन योगदानों के संदर्भ में यहाँ कुछ और भी है।

हमने प्यूरिटन से बहुत कुछ विरासत में पाया है। हो सकता है कि हम इसके बारे में न जानते हों। ठीक है, तो चलिए प्यूरिटन धर्मशास्त्र की ओर बढ़ते हैं।

आइए प्यूरिटन धर्मशास्त्र के बारे में बात करें और जानें कि यह किस बारे में है। मैंने प्यूरिटन धर्मशास्त्र के साथ क्या किया है: मैंने उस धर्मशास्त्र के चार पहलुओं को चुना है। यह एक ऐसा कोर्स है जिसमें हम चार शताब्दियों को शामिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

हम कोर्स का पूरा बाकी समय यहीं बिता सकते हैं। इसलिए कोर्स में कई जगहों पर यह सच है। इसलिए, मुझे कभी-कभी थोड़ा आगे बढ़ना पड़ता है।

तो, प्यूरिटन धर्मशास्त्र के साथ, मैंने उनके धर्मशास्त्र के कुछ मुख्य बिंदु और पहलू चुने हैं जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, नंबर एक के संदर्भ में, और मेरे पास ये पावरपॉइंट पर नहीं हैं। मैं बस इनके बारे में बात करूँगा।

लेकिन सबसे पहली बात यह होगी कि ईश्वर ने दुनिया बनाई है और ईश्वर ही दुनिया पर राज करता है। ईश्वर ही दुनिया का निर्माता है और ईश्वर ही दुनिया का संरक्षक है। प्यूरिटन धर्मशास्त्र के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है।

और इसलिए, जहाँ तक प्यूरिटन का सवाल है, पृथ्वी और उसमें मौजूद हर चीज़ भगवान की है। ठीक है, अब मैं इसके बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ। एक बात यह है कि भगवान ने दुनिया को आदेश दिया, दुनिया को बनाया, भगवान ने दुनिया पर शासन किया, भगवान ने दुनिया की रक्षा की, और पृथ्वी पर मौजूद हर चीज़ भगवान की है।

क्योंकि यह सच है, भगवान ने हर किसी को जीवन में कुछ निश्चित पद दिए हैं। भगवान ने हर किसी को काम दिए हैं। हम इस बारे में बाद में बात करेंगे।

लेकिन साथ ही, ईश्वर ने जीवन में कुछ निश्चित पद निर्धारित किए हैं, और ये पद ईश्वर द्वारा निर्धारित किए गए हैं और इसलिए अच्छे हैं। व्यक्ति ईश्वर की सेवा करता है, और एक तरह से ईश्वर की पूजा करता है, यह समझकर कि उसका व्यवसाय क्या है और जीवन में उसका पद क्या है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि यह ईश्वर द्वारा आदेशित है।

इसका एक आदर्श उदाहरण वह है जो मुझे लगता है कि अब बंद हो चुका है, लेकिन बोस्टन में ललित कला संग्रहालय में 17वीं सदी की डच कला का एक अद्भुत प्रदर्शन था। और यह बहुत बढ़िया था। 17वीं सदी की डच कला ने कला को ईश्वर द्वारा बनाए गए जीवन के विभिन्न चरणों के प्रतिबिंब के रूप में दर्शाया।

और इसलिए, जब आप प्रदर्शनी के पहले भाग में गए, तो क्या किसी ने संयोग से उस प्रदर्शनी को देखा? क्या आपने उसे देखा? हाँ। मुझे लगा कि यह बहुत दिलचस्प है, है न? और जब आप पहले भाग में गए, तो यह वह हिस्सा रहा होगा जहाँ डच दुनिया के शासकों और अन्य लोगों के बारे में बताया गया था।

और दूसरा हिस्सा शायद डच दुनिया के व्यापारी और कारीगर थे। और फिर शायद तीसरा हिस्सा शायद नौकर, डच दुनिया में सेवा करने वाले लोग और इसी तरह के अन्य लोग थे। लेकिन उन्होंने प्रदर्शन के माध्यम से यह बात स्पष्ट की कि जहाँ तक इन डच सुधारवादी लोगों का सवाल है, जो प्यूरिटन की तरह कैल्विनवादी थे, वे कैल्विनवादी थे।

जहाँ तक उनका सवाल है, जीवन में ये सभी पद और क्रम ईश्वर द्वारा निर्धारित किए गए हैं। और इसलिए आप जिस भी पद, जिस भी व्यवसाय में खुद को पाते हैं, जिस भी पद पर आप खुद को पाते हैं, वह ईश्वर द्वारा निर्धारित किया गया है। इसलिए, आप बस ईश्वर द्वारा आपको दी गई चीज़ों का आनंद लें।

तो यह प्यूरिटन के बारे में बहुत हद तक सच था, इसमें कोई संदेह नहीं है। अब, इस दुनिया पर परमेश्वर के शासन के संदर्भ में, जिस तरह से आप परमेश्वर का सम्मान करते हैं। इसलिए, परमेश्वर का सम्मान करने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप अपने जीवन के तरीके से परमेश्वर का सम्मान करें और परमेश्वर की महिमा करें। आपका जीवन इस तथ्य का एक जीवित गवाह है कि आप परमेश्वर का सम्मान करना चाहते हैं, कि आप परमेश्वर की महिमा करना चाहते हैं।

इसलिए, प्यूरिटन के कुछ पाप आलस्य और निष्क्रियता थे। यदि आप आलसी हैं और यदि आप निष्क्रिय हैं, और यदि आप परमेश्वर की महिमा करने के लिए काम नहीं कर रहे हैं, तो यह एक संकेत हो सकता है कि आप उस व्यवसाय के अनुरूप नहीं जी रहे हैं जो परमेश्वर ने आपको दिया है। और आप वह नहीं कर रहे हैं जो आपको इस परमेश्वर का सम्मान और महिमा करने के लिए करना चाहिए जिसने न केवल दुनिया को बनाया है और दुनिया को बचाया है बल्कि जो दुनिया को बचाता है और इसी तरह।

तो, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। अब, हमने पहले उल्लेख किया है, स्थायी योगदान के संदर्भ में, उपयोगी कार्य का मूल्य। यही पर कार्य का वह मूल्य, वह कार्य नैतिकता, अमेरिकी नागरिक जीवन और सार्वजनिक जीवन में आती है।

और हम अभी भी अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में, अमेरिकी सांस्कृतिक जीवन में एक तरह से उसी के साथ जी रहे हैं। अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में काम करने की नैतिकता बहुत मजबूत है, आंशिक रूप से, फिर से, प्यूरिटन के कारण। ठीक है, नंबर दो।

मुझे लगता है कि हमें जिस दूसरे तरह के धर्मशास्त्र के बारे में बात करनी चाहिए, वह है प्यूरिटन की वोकेशन की समझ। प्यूरिटन की वोकेशन की समझ। ठीक है, तो हमें कहाँ से शुरू करना चाहिए? वोकेशन के मामले में, हमें संभवतः मध्ययुगीन दुनिया से शुरुआत करनी चाहिए।

और आइए हम यह पता लगाते हैं कि मध्ययुगीन दुनिया में क्या चल रहा था और फिर उस पर तेजी से आगे बढ़ते हैं जहां प्यूरिटन वास्तव में इससे असहमत हैं। मध्ययुगीन दुनिया में, यदि आप मध्ययुगीन ईसाई सोच के बारे में सोच रहे थे, यदि आप एक सच्चे ईसाई थे, एक सच्चे ईसाई, तो आप एक मठ या ननरी में जाते थे। आप खुद को इस दुनिया से बाहर निकाल लेते थे, और आप एक भिक्षु या नन के रूप में अपने व्यवसाय में ईश्वर की आज्ञाकारिता का जीवन जीते थे।

आप एक तरह से तपस्वी होंगे। ठीक है, यह आध्यात्मिकता का सबसे उच्च स्तर होगा। ठीक है, आध्यात्मिकता का अगला स्तर, अगर आप मठ या ननरी या ऐसी किसी जगह पर नहीं जा सकते, तो पुरुषों के लिए आध्यात्मिकता का अगला स्तर यह था कि आप पुजारी बन सकते थे।

कम से कम आप पुजारी तो बन सकते थे। कम से कम आप पुरोहिती तरीके से लोगों की सेवा तो कर सकते थे। आप उपदेश तो दे सकते थे।

आप संस्कार आदि दे सकते थे। यदि आप भिक्षु या नन बनने के लिए पर्याप्त आध्यात्मिक नहीं थे, तो शायद आप पुजारी बनने के लिए पर्याप्त आध्यात्मिक हों। ठीक है, मध्ययुगीन दुनिया में सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर आम लोग थे।

वे लोग थे जो कहते थे, ठीक है, आप साधु या नन नहीं बन सकते। ठीक है, आप पुजारी नहीं बन सकते। ठीक है, आप शादी करेंगे और बच्चे पैदा करेंगे और खेत या किसी और काम पर जाएँगे।

ठीक है, हम इसकी अनुमति देंगे। लेकिन यह सभी संभावित दुनियाओं में सबसे अच्छा नहीं है। लेकिन इसकी अनुमति दी जाएगी।

मध्ययुगीन दुनिया में निश्चित रूप से व्यवसाय का एक पदानुक्रम था। ठीक है, प्रोटेस्टेंटवाद मार्टिन लूथर और केल्विन के साथ आता है और फिर, बाद में 17 वीं शताब्दी में, प्यूरिटन। प्रोटेस्टेंटवाद आता है और उसे मना कर देता है।

मार्टिन लूथर ने खुद कहा था कि सभी व्यवसाय समान रूप से योग्य हैं। सभी व्यवसाय और ईश्वर की ओर से सभी आह्वान समान रूप से योग्य हैं। वे एक ही स्तर पर हैं।

इसलिए, अगर आपको पुजारी बनने के लिए बुलाया जाता है, तो यह ठीक है। या अगर आपको मंत्री बनने के लिए बुलाया जाता है, तो यह ठीक है। लेकिन अगर आपको मजदूर बनने के लिए बुलाया जाता है, तो यह मंत्री बनने के बराबर है।

लूथर ने गृहिणी की कल्पना का भी इस्तेमाल किया। अगर आपको गृहिणी बनने और बच्चों की परवरिश करने के लिए बुलाया जाता है, तो यह पुजारी या भिक्षु या मजदूर या जो भी हो, होने के बराबर है। इसलिए सभी व्यवसाय समान रूप से योग्य हैं।

तो प्रोटेस्टेंट रिफॉर्मेशन ने जो किया वह यह था कि इसने सभी व्यवसायों को एक ही स्तर पर ला दिया। और प्यूरिटन ने इसे अपनाया। प्यूरिटन अच्छे प्रोटेस्टेंट हैं।

उन्हें कैथोलिकों की इस तरह की पदानुक्रमिक धारणा पसंद नहीं है। इसलिए, हम सभी व्यवसायों में ईश्वर की महिमा कर सकते हैं। सभी व्यवसाय ईश्वर की महिमा करने के तरीके हैं।

अब, यह अच्छा प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र है, और यह एक अच्छा प्रकार का प्यूरिटन धर्मशास्त्र है। मुझे नहीं पता कि आपके बड़े होने पर यह कैसा रहा। मैं एक इंग्लिश चर्च में पला-बढ़ा हूँ, और शायद आप में से कुछ लोग भी ऐसे ही रहे होंगे।

मुझे नहीं पता। शायद हमें कोर्स के अंत में पता चल जाए कि हम सब कहाँ हैं और हमारी निष्ठा क्या रही है। हो सकता है कि इस कमरे में मौजूद किसी को यह बात समझ में न आए, लेकिन अगर ऐसा होता है, तो अपना सिर हिलाकर हाँ कहें।

लेकिन इंग्लिशवाद में पले-बढ़े होने के कारण, आपको निश्चित रूप से यह एहसास हुआ होगा। यह बात कहने से ज़्यादा निहित थी, लेकिन आपको निश्चित रूप से यह एहसास हुआ होगा कि अगर आप एक सच्चे ईसाई हैं, तो आप निश्चित रूप से एक मिशनरी बनने जा रहे हैं। यह पूर्ण है।

वे सुपर ईसाई हैं। हम इन महान मिशनरियों को चर्च में बुलाते हैं, और हे भगवान, यह भगवान का मुख्य काम है। दूसरी बात, अगर आप मिशनरी नहीं बन सकते, तो आप पादरी तो बन ही सकते हैं।

आप पादरी बन सकते हैं। कम से कम आप पादरी तो बन ही सकते हैं। अब, हममें से बाकी लोगों के लिए, यहाँ इस तरह के आम लोग हैं।

मुझे नहीं पता कि वे सब क्या कर रहे हैं। मैं लगभग मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक व्यवसाय की धारणा के साथ बड़ा हुआ हूँ। अब, यह मध्ययुगीन दुनिया की तरह स्पष्ट नहीं था, लेकिन यह निहित था।

मुझे नहीं पता कि आप में से कोई ऐसी परंपराओं में पला-बढ़ा है या नहीं, लेकिन एक बहुत ही मजबूत निहितार्थ था कि अगर आप वास्तव में आस्तिक हैं, तो मिशनरी कार्य आपके लिए ही होगा। यह आपके लिए ईश्वर द्वारा चुना गया पेशा है। अगर आप नहीं हैं, तो आप पादरी बन सकते हैं।

अगर आप इनमें से कोई भी नहीं बन सकते, तो आप एक आम आदमी ही बनेंगे। कोई बात नहीं। यह मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक है।

यह प्रोटेस्टेंट नहीं है। यह प्रोटेस्टेंट तरीका नहीं है। प्यूरिटन ने हमें सिखाया कि प्रोटेस्टेंट तरीका यह है कि सभी व्यवसाय समान रूप से योग्य हैं।

मुझे लगता है कि अब एक लंबा प्रवचन आने वाला है, लेकिन मेरे पास लंबे प्रवचन के लिए समय नहीं है। इसलिए, अगर आप में से कोई भी उस परंपरा में पला-बढ़ा है, तो आइए अभी भूत-प्रेत भगाने का काम करें और उससे छुटकारा पाएं। उस तरह की सोच से छुटकारा पाएं।

यह मध्ययुगीन कैथोलिक सोच है। यह अच्छी प्रोटेस्टेंट सोच नहीं है। प्यूरिटन ने हमें यह याद रखने में मदद की कि सभी व्यवसाय समान रूप से योग्य हैं, और आप अपने व्यवसाय से भगवान की महिमा करते हैं।

तो, आप अपने व्यवसाय से परमेश्वर की महिमा करते हैं। तो, आप अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ाते हैं, और आप इस दुनिया में काम करते हैं, यह बात जिसका हमने पहले उल्लेख किया है, यह सांसारिक तप है। आप इस दुनिया में परमेश्वर की महिमा के लिए अपना काम करते हैं।

तो, ज़ाहिर है, व्यवसाय बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, नंबर तीन, प्यूरिटन के लिए तीसरी बात, और वह है ईश्वर का पारलौकिकता। ईश्वर का पारलौकिकता।

ईश्वर की उत्कृष्टता के लिए हम बहुत से शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं। हम ईश्वर की महिमा, ईश्वर की महिमा और ईश्वर की महानता कह सकते हैं क्योंकि प्यूरिटन इस महान ईश्वर की उत्कृष्टता पर जोर देते हैं, जो सभी चीजों का निर्माता, संरक्षक और शासक है। तो, ईश्वर की उत्कृष्टता।

भगवान आपका अच्छा दोस्त नहीं है। भगवान आपका अच्छा दोस्त नहीं है। भगवान ऊपर वाला आदमी नहीं है, और आप नीचे वाले आदमी नहीं हैं या कुछ और।

तो यह प्यूरिटन के लिए ईश्वर नहीं है। यह प्यूरिटन के लिए बाइबल का ईश्वर नहीं है। तो, यह ईश्वर की महान उत्कृष्टता है।

अब, इससे एक निष्कर्ष निकलता है, और मुझे नहीं पता कि आप इस निष्कर्ष को सकारात्मक या नकारात्मक रूप में देखना चाहते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप प्यूरिटन को किस तरह समझते हैं और वे क्या कहना चाहते हैं। इससे जो निष्कर्ष निकलता है, वह यह है कि ईश्वर को चित्रित करने के किसी भी प्रयास से सावधान रहें।

ईश्वर को चित्रित करने का कोई भी प्रयास अस्वीकार्य है। इसलिए, प्यूरिटन लोग ऐसी कला को पसंद नहीं करते थे जो ईश्वर को चित्रित करने का प्रयास करती हो। उन्हें ऐसी मूर्तियाँ पसंद नहीं थीं जो ईश्वर को चित्रित करने का प्रयास करती हों, या उन्हें ऐसी पेंटिंग पसंद नहीं थीं जो ईश्वर को चित्रित करने का प्रयास करती हों, या उन्हें ऐसी रंगीन कांच की खिड़कियाँ पसंद नहीं थीं जो ईश्वर को चित्रित करने का प्रयास करती हों।

उन्होंने इसे ईश्वर की महिमा के लिए अपमानजनक पाया। इसलिए, प्यूरिटन धार्मिक जीवन बहुत सादगी का जीवन है। और प्यूरिटन चर्च, अब हमारे पास प्यूरिटन चर्च नहीं हैं, मूल, आप जानते हैं, पहली सदी के प्यूरिटन चर्च।

लेकिन प्यूरिटन चर्च बहुत ही सादे, बहुत ही सादे तरीके से बनाए गए थे। चर्च में एक या दो खिड़कियाँ होती थीं, और वहाँ बेंच होती थीं जिन पर आप बैठते थे, और फिर उपदेश देने के लिए एक मंच होता था क्योंकि सेवा, धर्मोपदेश, तीन घंटे या उससे ज़्यादा का हो सकता था। लेकिन वहाँ कोई क्रॉस नहीं है, कोई रंगीन कांच की खिड़कियाँ नहीं हैं, चर्च में कोई मूर्तियाँ नहीं हैं।

जहाँ तक उनका सवाल है, यह सब ईश्वर की उत्कृष्टता और महिमा के विरुद्ध था। और इसलिए, उनकी आराधना सेवा में प्यूरिटन जीवन की सादगी वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है। हाँ।

हाँ। नहीं, यह किसी भी धार्मिक चीज़, ईश्वर या मसीह या स्वर्गदूतों या पवित्र आत्मा या जो भी हो, के बारे में विस्तार से बताने के लिए था। तो, क्या वहाँ हैं? ठीक है।

ठीक है। उसी कारण से? क्योंकि यह भगवान की महिमा को कम करता है? शायद किसी अलग कारण से। हाँ।

हाँ। थोड़ी और ताकत। प्यूरिटन के पास वास्तव में इन सब के पीछे एक धार्मिक कारण था।

और इसलिए वे पहले प्यूरिटन चर्च हैं। और यह भी दिलचस्प है। क्या आप में से कोई बोस्टन में ओल्ड साउथ मीटिंग हाउस गया है? अगर आपने बोस्टन फ्रीडम ट्रेल किया है, तो आप ओल्ड

साउथ मीटिंग हाउस गए हैं? अगर आप ओल्ड साउथ मीटिंग हाउस जाते हैं, जो प्यूरिटन है, तो सावधान रहें क्योंकि यह उस जगह पर चौथी संरचना है। तो यह मूल प्यूरिटन चर्च नहीं है।

और वैसे, ये सभी सामूहिक चर्च जो आप देखते हैं या यूनिटेरियन चर्च जो आप न्यू इंग्लैंड में देखते हैं, वे प्यूरिटन सिद्धांत के परिणाम हैं, लेकिन वे शुरुआती प्यूरिटन चर्चों की तुलना में अधिक विस्तृत हैं। लेकिन जब आप ओल्ड साउथ मीटिंग हाउस में जाते हैं, तो वे आपको यह बात समझा देंगे। वे ओल्ड साउथ मीटिंग हाउस में आपसे कहेंगे, वे कहेंगे, चारों ओर देखो।

क्या आपको इस मीटिंग हाउस में कोई क्रॉस भी दिखाई देता है? और फिर आप सोचने लगते हैं, मुझे इस मीटिंग हाउस में कोई क्रॉस भी नहीं दिखाई देता। खैर, यह प्यूरिटन के लिए सच होगा। यह सिर्फ चर्च की सादगी नहीं थी जिसमें कोई रंगीन कांच की खिड़कियाँ और कोई मूर्तियाँ नहीं थीं।

यह सिर्फ चर्च की सादगी नहीं थी। यह भी था कि हम जीवन में जो भी काम करते हैं, वह धार्मिक है। हम जीवन में जो कुछ भी करते हैं, वह परमेश्वर की महिमा के लिए है।

इसलिए, जब आप रविवार की सुबह प्यूरिटन चर्च में सेवा के लिए आते हैं, तो यह निश्चित रूप से एक धार्मिक कार्य है। लेकिन जब आप मंगलवार की रात को सरकार बनाने या सरकार के कानूनों से निपटने के लिए मिलते हैं, तो यह भी एक धार्मिक कार्य है। इसलिए, ईश्वर को चित्रित करने और ईश्वर के लिए काम करने के संदर्भ में सादगी की ये प्यूरिटन समझ कई अलग-अलग तरीकों से सामने आती है।

इसलिए, प्यूरिटन के लिए, ईश्वर के पारलौकिक होने का यह मुद्दा वास्तव में बहुत मजबूत है। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि इस पारलौकिकता को एक अर्थ में वर्णित करने के लिए दो शब्द हैं। हमें ईश्वर की पारलौकिकता से यह पता चलता है कि वह कौन है।

तो, मैं इन दो शब्दों का जिक्र करना चाहूँगा। पहला, ईश्वर की शक्ति। ईश्वर की शक्ति यह है कि आप बस ईश्वर की उस शक्ति में आनन्दित हों।

आप ईश्वर की शक्ति पर सवाल नहीं उठाते। और दूसरा शब्द एक ऐसा शब्द है जिसका हम आजकल बहुत ज़्यादा इस्तेमाल नहीं करते, लेकिन यह ईश्वर की अज्ञेयता है। ईश्वर अज्ञेय है।

अब 'अज्ञेय' से हमारा मतलब है कि परमेश्वर के तरीके हमारे लिए रहस्यमय हैं। वे जानने से परे हैं। वे अज्ञेय हैं।

हमें बस भरोसा करना है। हमें उसके काम करने के तरीके पर भरोसा करना है क्योंकि वह ईश्वर है। तो, ईश्वर की इस उत्कृष्टता ने ईश्वर की शक्ति के बारे में बात की, और फिर इसने ईश्वर की अज्ञेयता के बारे में बात की।

ठीक है, अब एक सिद्धांत जहाँ यह बहुत स्पष्ट हो जाता है वह है ईश्वर की शक्ति, ईश्वर की अज्ञेयता क्योंकि यह ईश्वर पारलौकिक है। लेकिन प्यूरिटन्स के लिए, एक सिद्धांत जहाँ यह बहुत,

बहुत स्पष्ट हो जाता है वह है जॉन कैल्विन का पूर्वनियति का सिद्धांत। पूर्वनियति का सिद्धांत, चुनाव का सिद्धांत।

अब, पूर्वनियति पर सेंट ऑगस्टीन और अन्य लोगों द्वारा पहले ही विचार किया जा चुका था। और मार्टिन लूथर ने भी, निश्चित रूप से, पूर्वनियति की कुछ समझ विकसित की। हालाँकि, कैल्विन के समय तक पूर्वनियति, और फिर प्यूरिटन कैल्विन को प्रतिबिंबित करने जा रहे हैं, एक तरह से एकल पूर्वनियति है।

भगवान कुछ लोगों को बचाने के लिए चुनते हैं, और बाकी लोगों का क्या होता है? खैर, उन्हें एक तरह से अपने ही हाल पर छोड़ दिया जाता है और इसी तरह की अन्य बातें। इसलिए, कैल्विन के समय तक पूर्वनियति एक ही पूर्वनियति थी। इसे जॉन कैल्विन के साथ स्पष्ट रूप से स्पष्ट रूप से नहीं समझाया गया था।

जॉन कैल्विन आते हैं और कहते हैं, ठीक है, मैं ऑगस्टीन से सहमत हूँ। मैं मार्टिन लूथर से सहमत हूँ। लेकिन उन्होंने पर्याप्त नहीं कहा है।

इसलिए, हमें जो करने की ज़रूरत है वह है ईश्वर की उत्कृष्टता के प्रतिबिंब के रूप में पूर्वनियति पर ध्यान केंद्रित करना। इसलिए, कैल्विन आता है, और प्यूरिटन उसका अनुसरण करते हैं। कैल्विन आता है और एक दोहरे चुनाव, एक दोहरे पूर्वनियति का प्रचार करता है।

इसका मतलब यह है कि परमेश्वर न केवल उन लोगों को चुनता है जो बचाए जाने वाले हैं, बल्कि वह उन लोगों को भी चुनता है जो शापित होने वाले हैं। इसलिए, परमेश्वर का चुनाव छोटा है। अब, यह समझ से परे है।

उसके तरीके हमारी समझ से परे हैं, वह ऐसा कैसे करता है, क्यों करता है। और हम परमेश्वर की शक्ति को नहीं समझते। निश्चित रूप से उसके पास ऐसा करने की शक्ति है।

यह थोड़ा गूढ़ है। फिर भी, वे दोहरे चुनाव को ईश्वर की उत्कृष्टता, ईश्वर की महिमा और ईश्वर की महिमा के संकेत के रूप में मानते थे, जिसका अर्थ है कि वह शक्तिशाली है, जिसका अर्थ है कि वह गूढ़ है। इसलिए, कैल्विन और प्यूरिटन्स के दोहरे चुनाव को समझाने के लिए, आइए हम कमरे को आधे में विभाजित करें, बस मजे के लिए।

मेरा मतलब है, यह सिर्फ मनोरंजन के लिए है। लेकिन चलिए इसे यहीं आधे में बांट देते हैं। मान लीजिए, तर्क के लिए, दोहरे चुनाव को समझाने के लिए, मान लीजिए... हालाँकि, ये चलने वाली कुर्सीयाँ हैं।

यह एक समस्या है। मान लीजिए, तर्क के लिए, कि ये लोग दुनिया के उद्धार से पहले ही परमेश्वर द्वारा चुने गए थे। हम इस पर आनन्दित हो रहे हैं, है न? तो, हम इस पर आनन्दित हो रहे हैं।

अब, मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि डॉ. हिल्डेब्रांट हमारे साथ हैं। इसलिए, मैं चाहता हूँ कि वे बच जाएँ। ठीक है।

इसका मतलब यह है कि यह पक्ष यहीं है, यह पक्ष, दुनिया के शुरू होने से पहले, भगवान की अज्ञेय, अज्ञानी इच्छा से जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझ सकते। इसका मतलब है कि इस पक्ष को भगवान द्वारा शापित होने के लिए पहले से ही नियत किया गया था। यह अज्ञेय है। हम नहीं... ठीक है।

अब, सवाल यह है कि उनके प्रति आपका रवैया कैसा होना चाहिए? यह होना चाहिए... आपका रवैया कैसा होना चाहिए... अब, मैं यह नहीं कह रहा कि यह क्या है, लेकिन यह क्या होना चाहिए... यह होना चाहिए, आप जानते हैं, अद्भुत कि भगवान की कृपा इतनी खूबसूरती से काम कर रही है, भले ही मैं इसका हिस्सा नहीं हूँ। ऐसा ही होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है, और आपको इन लोगों के बारे में कुछ बातें कहनी हैं।

और उन लोगों के बारे में ये बातें कहकर, आप यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि परमेश्वर ने आपको हर समय शापित करने के लिए जो चुनाव किया था, वह सही था। तो आप बस अपनी भविष्यवाणी या जो भी शब्द है, उसके द्वारा प्रदर्शित कर रहे हैं। आप बस यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि परमेश्वर अपने निर्णय में सही है।

इन लोगों के प्रति आपका रवैया कैसा होना चाहिए, बेशक? यह होना चाहिए, लेकिन भगवान की कृपा के लिए मैं जाता हूँ। अगर भगवान की कृपा न होती, हाँ, मैं कमरे के उस तरफ बैठा होता। तो इन लोगों के प्रति आपका रवैया ऐसा ही होना चाहिए। तो इस तरह का दोहरा चुनाव होता है।

अब, हम सभी कुर्सियों को एक साथ रखेंगे, और सभी लोग फिर से एक साथ होंगे। लेकिन हम बस यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि प्यूरिटन लोग ईश्वर की इस पारलौकिक प्रकृति और पूर्वनिर्धारित करने की उसकी शक्ति के बारे में कैसा महसूस करते थे। और वे उस पर विश्वास करते थे।

अब, मान लीजिए कि इस तरह के सिद्धांत का प्रचार करने से आश्वासन का सवाल उठता है। तो, यह हमेशा आश्वासन का सवाल उठाता है। प्यूरिटन धर्मशास्त्र में यह एक समस्या बन जाती है: आश्वासन।

इसलिए, प्यूरिटन ने आश्वासन की उस समस्या का उत्तर दिया क्योंकि यदि आप, आप जानते हैं, तो क्या आप आश्चर्य हो सकते हैं कि आप ईश्वर के बच्चे हैं? क्या आप आश्चर्य हो सकते हैं कि आप पापियों में से एक नहीं हैं, आप जानते हैं? क्या आप इसके बारे में आश्चर्य हो सकते हैं? आश्वासन का प्रश्न उठाया। एक अर्थ में, आश्वासन के उस प्रश्न का उत्तर यह था कि क्या आप ईश्वर द्वारा आपको दिए गए व्यवसाय को यथासंभव जी रहे हैं? और क्या आप अपने जीवन के हर पहलू में ईश्वर की आराधना कर रहे हैं? यह समस्या का प्यूरिटन प्रकार का उत्तर बन जाता है। क्योंकि यदि इसका उत्तर हाँ है, तो यह एक प्रदर्शन है कि आपको ईश्वर द्वारा बचाए जाने के लिए बुलाया गया है।

अगर आप ऐसा कर सकते हैं, तो हाँ में जवाब दें। अब, अगर, दूसरी तरफ, आप ईश्वर के खिलाफ विद्रोह का जीवन जी रहे हैं और आप अपने व्यवसाय के बारे में अच्छे नहीं हैं। तो आप चर्च नहीं जाते।

आप बाइबल का अध्ययन नहीं करते और बाइबल नहीं पढ़ते। आपको तीन घंटे का उपदेश सुनना पसंद नहीं है। अगर आपकी जिंदगी ऐसी ही है, तो शायद यह इस बात का संकेत है कि आपको अभिशाप के लिए चुना गया है।

यह शायद एक संकेत है। तो, आपके पास आश्वासन का कुछ संकेत हो सकता है। और आपके पास यह भी संकेत हो सकता है कि शायद आपको शाप के लिए चुना गया है।

लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने व्यवसाय का पालन कैसे करने जा रहे हैं और आप चर्च के जीवन और मसीह के जीवन के प्रति कितने सच्चे हैं। तो इस आश्वासन के मुद्दे पर काबू पाने के तरीके हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन इसने आश्वासन की थोड़ी समस्या पैदा की।

तो फिर प्यूरिटन उपदेशक जब तीन घंटे का उपदेश देता है तो आपको प्रोत्साहित करता है। और मैं 'वह' शब्द का इस्तेमाल इसलिए करता हूँ क्योंकि प्यूरिटन ने उसे यही सिखाया था। तो, अपने उपदेशों और तीन घंटे तक उसके उपदेश को सुनने के ज़रिए, वह आपको ऐसा जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है जो मसीह का सम्मान करेगा।

और अगर आप ऐसा करते हैं, तो आप अपने आश्वासन के बारे में काफी हद तक आश्वस्त हो सकते हैं। ठीक है, चलिए चौथा काम करते हैं। चलिए चौथा काम करते हैं।

और चौथा होगा सभी विश्वासियों का पुरोहिताई। सभी विश्वासियों का पुरोहिताई। तो चलिए सभी विश्वासियों के इस पुरोहिताई के बारे में कुछ बातें कहते हैं।

सभी विश्वासियों के पुरोहिताई को व्यवसाय से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। और हम हमेशा ऐसा करते हैं। प्रोटेस्टेंट हमेशा ऐसा करते हैं।

मैं इन दो शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल होते हुए सुनता हूँ। हमें सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व की उनकी समझ को उनके व्यवसाय की धारणा के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिए। क्योंकि व्यवसाय की उनकी धारणा में, कुछ लोगों को ईश्वर द्वारा बुलाया जाता है, यही उनका व्यवसाय है, सुसमाचार का प्रचार करना, बाइबल से उपदेश देना, संस्कार देना।

यह ईश्वर की ओर से एक आह्वान है। सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का मतलब यह नहीं है कि चर्च के सभी लोग ऐसा कर सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि चर्च में हर कोई खड़ा होकर बाइबल से उपदेश दे सकता है या बाइबल की व्याख्या कर सकता है या संस्कार दे सकता है।

सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का मतलब यह बिल्कुल नहीं है क्योंकि यह व्यवसाय की धारणा है। उपदेश देने की क्षमता और संस्कार देने और मण्डली पर पादरी होने की क्षमता एक व्यवसाय

है। ठीक है, सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का मतलब यह है कि हम कर सकते हैं; हालाँकि, भले ही सभी को उपदेश देने के लिए नहीं बुलाया जाता है, हम कई तरीकों से एक-दूसरे के लिए पुजारी हो सकते हैं।

तो, मैं आपका पुजारी बन सकता हूँ और आपके लिए प्रार्थना कर सकता हूँ। मेरे लिए प्रार्थना करते समय आप मेरे पुजारी बन सकते हैं। हमें ऐसा करने के लिए किसी पुजारी की ज़रूरत नहीं है।

मैं आपको सलाह देने में आपका पुजारी बन सकता हूँ। आप मेरे पुजारी बन सकते हैं और मुझे सलाह दे सकते हैं। इसलिए, सभी विश्वासियों का पुजारीत्व एक ऐसा सिद्धांत है जो वास्तव में परमेश्वर के लोगों द्वारा परमेश्वर के लोगों के लिए एक प्रकार की देहाती देखभाल है।

और यही सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का अर्थ है, इसे व्यवसाय से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए, सभी विश्वासियों का पुरोहितत्व इन लोगों के लिए वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है। अब, इसने जो किया वह यह था कि इसने चर्च में आम लोगों के महत्व को बढ़ा दिया।

सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का मतलब था कि चर्च में आम लोग बहुत, बहुत महत्वपूर्ण थे। वे ऐसे लोग नहीं हैं जो सिर्फ़ एक बेंच पर बैठते हैं और उपदेश सुनते हैं। ये वे लोग हैं जो एक बेंच पर बैठते हैं, एक उपदेश सुनते हैं, और फिर एक-दूसरे की खातिर अपने सामुदायिक जीवन में उस सब को लागू करते हैं।

तो, सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व ने वास्तव में इस व्यक्तिगत मुद्दे को उभारा, इसमें कोई संदेह नहीं है। अब, मैं इसके लिए कौन सा शब्द इस्तेमाल कर रहा हूँ? आम लोगों का महत्व। हम इसे अमेरिकी ईसाई धर्म के प्राथमिक पहलू के रूप में देखेंगे।

यह 18वीं सदी में पहली महान जागृति के रूप में प्रवाहित होने जा रहा है। यह 19वीं सदी में दूसरी महान जागृति के रूप में प्रवाहित होने जा रहा है। यह 20वीं सदी में कट्टरवाद और इंजीलवाद के रूप में आने जा रहा है।

यह अमेरिकी ईसाई धर्म के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा होने जा रहा है : आम लोगों का महत्व। ठीक है, अब मैं यहीं रुकता हूँ और देखता हूँ कि क्या अब तक कोई सवाल है, ठीक जहाँ तक हम हैं। अमेरिका में इस पहले प्यूरिटनवाद के बारे में कोई सवाल? प्यूरिटन को समझने की कोई कोशिश? हाँ, मुझे यहाँ कुछ नाम भी लेने दो।

फिर से, आगे बढ़ो। क्या प्यूरिटन इस्कैरियट द्वीप समूह की तरह कठोर दंड नहीं देते थे? दुर्भाग्य से, प्यूरिटन को उनके कठोर दंड के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा, और दो बातें दिमाग में आती हैं। हम पहले का उल्लेख करेंगे जिसका उल्लेख हमने दूसरे व्याख्यान में किया था।

मुझे लगता है कि हमने शायद पहले ही इसका उल्लेख कर दिया है, लेकिन वे बोस्टन कॉमन पर क्रेकर्स को फांसी पर लटका रहे थे। ऐसा करना अच्छी बात नहीं थी, लेकिन वे बोस्टन कॉमन पर

केकर्स को फांसी पर लटका रहे थे क्योंकि केकर्स बहुत ही विधर्मी थे। और फिर, बेशक, चुड़ैल परीक्षण, जिसे हम सलेम चुड़ैल परीक्षण कहते हैं।

चुड़ैल परीक्षणों के लिए स्मारक कहाँ है ? बेशक, यह डेनवर में है क्योंकि डेनवर सलेम का हिस्सा था, और सलेम चुड़ैल परीक्षण तब नहीं हुआ जब आप सलेम शहर में जाते हैं। वे उस जगह पर हुए जिसे आज डेनवर कहा जाता है, और वहाँ सलेम चुड़ैल परीक्षणों के स्मारक हैं। तो, चुड़ैल परीक्षण भी प्यूरिटन की यह ज़रूरत थी कि विधर्म को सामाजिक व्यवस्था में व्यवधान पैदा करने की अनुमति न दी जाए।

तो, हाँ, मैं कहूँगा कि उन्होंने इसके कुछ बुरे पहलू भी अर्जित किए हैं। कुछ और? हाँ। रिकार्डों।

हाँ, रिकार्डों। तो, मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता था, क्योंकि प्यूरिटन धर्मशास्त्र स्लाइड पर नहीं था, कि मुझे इसका मुख्य बिंदु पता था। ठीक है, ठीक है।

हाँ, हमने चार में किया। तो, भगवान ने दुनिया बनाई। सही है।

तो भगवान सर्वोपरि है। सही है। व्यवसाय की समझ।

ठीक है, हाँ। पूर्वनियति का बपतिस्मा। हाँ, इसका संबंध ईश्वर की उत्कृष्टता से भी है।

ठीक है, हाँ। ये वो चार हैं जिन्हें मैंने चुना है। मैंने इन्हें आंशिक रूप से इसलिए चुना क्योंकि अमेरिकी ईसाई धर्म में चार तरह के प्रचलित विषय हैं।

और जाहिर है, प्यूरिटन धर्मशास्त्र के साथ हम बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन मैंने उन चार को चुना है ताकि एक तरह से हाइलाइट किया जा सके। क्या इससे मदद मिलती है, रिकार्डों? हाँ, एरिक। तो, मेरे पास आश्वासन के बारे में एक सवाल है।

हाँ, ठीक है। तो, इस वजह से, ठीक है, आप जो चाहें लेकर आ सकते हैं। बस यही आज्ञादी का मतलब है।

सही है। या फिर यह सिर्फ़ एक-दूसरे के लिए है? सही है। उपदेशक का काम उन्हें यह भरोसा दिलाना है कि वे ईश्वर की संतान हैं।

और जिस तरह से उन्होंने ऐसा किया, उसका एक हिस्सा यह था कि क्या आप चर्च जा रहे हैं? क्या आप अपने धर्मग्रंथ पढ़ रहे हैं? क्या आप मसीह से प्रेम करते हैं? क्या आप हर दिन अपने व्यवसाय में मसीह की सेवा कर रहे हैं? तो, क्या उन लोगों के लिए बाहरी चिह्न हैं जिन्हें स्वर्ग जाने के लिए पूर्वनिर्धारित होने के लिए भगवान द्वारा बुलाया गया है? और यह पादरी का काम है, उपदेशक का काम है, आपको यह आश्वासन देते रहना कि आप भगवान द्वारा बुलाए गए हैं। ऐसा था, और मार्टिन लूथर इसका एक आदर्श उदाहरण है क्योंकि लूथर ने दोहरे चुनाव का पूरा सिद्धांत विकसित नहीं किया था, लूथर अभी भी पूर्वनिर्धारितता में विश्वास करता था। और, आप जानते हैं, जब आप लूथर को पढ़ते हैं, तो लूथर की समस्या का एक हिस्सा जो उसे समझ में आता

है, वह यह है कि जब भी वह पूर्वनिर्धारितता के बारे में सोचता है, तो उसे लगता है कि उसे शापित होने के लिए पूर्वनिर्धारित किया गया है।

इसलिए, इससे उसे कोई मदद नहीं मिली। और इसलिए, लूथर को वास्तव में इस पूरे आश्वासन की समस्या को हल करना पड़ा। उसे अपने जीवन में यह सब हल करना था, अभी भी पूर्वनियति में विश्वास करते हुए लेकिन फिर यह विश्वास करते हुए कि कुछ निश्चित संकेत हैं कि आप उद्धार के लिए ईश्वर द्वारा चुने गए हैं और उन संकेतों में आनन्दित होते हैं।

लूथर इसका एक आदर्श उदाहरण है, लेकिन प्यूरिटन पादरी और उपदेशक को इसमें आपकी मदद करनी चाहिए। और फिर सभी विश्वासियों का पुरोहित वर्ग एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर रहा था, एक दूसरे को परामर्श दे रहा था, और इसका एक हिस्सा आपके कार्यों, आपके व्यवसायों, मसीह के प्रति आपके प्रेम से एक दूसरे को आश्चस्त करना था कि आप ईश्वर की संतान हैं। तो, हाँ, उन्हें इस पर काम करना था।

हाँ, इसमें कोई संदेह नहीं है। नहीं, वे मानते थे कि निश्चित रूप से अन्य लोग भी थे। हालाँकि, प्यूरिटन बहुत अच्छे थे; मुझे लगता है कि वे इस बात से पूरी तरह आश्चस्त थे कि वे ईश्वर के वचन के सच्चे व्याख्याकार थे और इसलिए, मसीह के सच्चे अनुयायी थे और इसी तरह।

बेशक, उनके पास कैथोलिक विरोधी बहुत मजबूत पूर्वाग्रह था क्योंकि वे कैथोलिक धर्म को कर्मों का धर्म मानते थे न कि विश्वास के माध्यम से अनुग्रह का धर्म। उन्होंने केकरों को फांसी पर लटका दिया क्योंकि केकर, जहाँ तक उनका संबंध था, विधर्मी थे और इसी तरह। तो, आप जानते हैं, सहिष्णुता, मैं यह नहीं कहूँगा कि यह प्यूरिटन के लिए एक बड़ी बात थी।

मुझे लगता है कि उन्हें मूल रूप से लगा कि वे ईश्वर के सच्चे लोग हैं। ठीक है, यह एक अच्छा सवाल है, और इसके लिए, हम कैल्विन के पास वापस जाएंगे क्योंकि कैल्विन के पास दोहरे चुनाव की यह बहुत मजबूत धारणा थी, और इसलिए कुछ लोग कहते हैं, अच्छा, लड़के, सुसमाचार प्रचार, उपदेश और इसी तरह की अन्य बातों से क्या लेना-देना है? कैल्विन एक महान प्रचारक और एक महान उपदेशक थे क्योंकि जो लोग दुनिया की नींव से पहले ईश्वर द्वारा चुने गए हैं, जो लोग ईश्वर द्वारा चुने गए हैं, उन्हें यह जानने की जरूरत है। उन्हें ईश्वर द्वारा उनके चुनाव और ईश्वर की कृपा में उनके आश्वासन के बारे में जानने की जरूरत है।

इसलिए, प्रचार और सुसमाचार प्रचार की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। आपको कहानी को बाहर लाना होगा ताकि आप जिसे भी उपदेश दे रहे हैं, जो चुने गए हैं, वे उस पर प्रतिक्रिया दे सकें। इसलिए, इसने सुसमाचार प्रचार को कम नहीं किया ; बल्कि, इसने प्यूरिटन के लिए इसे मजबूत किया।

ठीक है, ऐसी कई बाहरी चीजें हैं जो आप कर सकते हैं... ठीक है, और यह उपदेशक पर निर्भर है कि वह उन्हें याद दिलाए कि ऐसा नहीं है। तो, यह कितना महत्वपूर्ण है, लेकिन हम जो काम कर रहे हैं, उससे हम बच नहीं सकते। वे काम ईश्वर की चुनी हुई इच्छा का संकेत हैं और ईश्वर की चुनी हुई इच्छा को थामे रखने का तरीका नहीं हैं।

लेकिन प्यूरिटन जीवन और संस्कृति में लोगों को इन्हीं बातों की याद दिलाने के लिए उपदेशक काफ़ी महत्वपूर्ण है। इसीलिए उपदेश तीन और चार घंटे के होने चाहिए थे। आपको वास्तव में यह समझना चाहिए।

और आप बिना पीठ वाली बेंचों पर बैठे हैं, याद रखें। तो, आप वहाँ तीन या चार घंटे बैठे रहते हैं। सब्बाथ बिताने का यह कितना बढ़िया तरीका है।

प्यूरिटन यहूदी सब्बाथ पर नहीं, बल्कि रविवार को सब्बाथ के रूप में मानते थे। इन लोगों के बारे में कुछ और भी है, इससे पहले कि हम उन्हें छोड़ दें? तो, बस स्पष्ट करते हुए, उनका कहना था कि वे आपके उद्धार के सबूत के रूप में काम करने पर जोर देते थे। हाँ, हाँ, सही है।

उद्धार स्वयं नहीं। उद्धार स्वयं केवल परमेश्वर की कृपा से परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित इच्छा के माध्यम से आता है। लेकिन कार्य इसका संकेत हैं।

आपका व्यवसाय इसका संकेत है। तीन घंटे के प्रवचनों से प्यार करना, यह एक संकेत है। अच्छा संकेत।

ठीक है, यहाँ कुछ और है? पाँच सेकंड का ब्रेक। पाँच सेकंड का ब्रेक लें। मैं आपको पाँच सेकंड में ब्रेक देना पसंद करता हूँ।

शुक्रवार को, मैं आपको दस सेकंड देता हूँ। तो, बस यहाँ एक छोटा सा ब्रेक ले लो। जब आप अपना पाँच सेकंड का ब्रेक ले रहे हैं, तो आज कोई भी कोर्स में शामिल नहीं हुआ है, है न? नहीं? हर किसी के पास फ़िनी का लेख है, है न? हर किसी के पास पाठ्यक्रम है? हाँ।

हर किसी को यह काम करना है कि पेपर कैसे लिखें? फ़िनी लेख। मैंने किया। ठीक है।

अगर आपने फ़िनी का लेख नहीं पढ़ा है, तो मैं उसे बाद में आपको दे सकता हूँ। हाँ। पाँच सेकंड।

ठीक है। हम ठीक कर रहे हैं। आप यह कर सकते हैं।

आपका दिल धन्य हो। ठीक है। व्याख्यान संख्या दो।

हम व्याख्यान संख्या दो पर जाएंगे और आज इसकी शुरुआत करेंगे। और व्याख्यान संख्या दो का नाम रोजर विलियम्स और रोड आइलैंड में धार्मिक विविधता है। तो, व्याख्यान दो।

यदि आप रूपरेखा का अनुसरण कर रहे हैं, तो यह आपके लिए सहायक है। तो, हम सबसे पहले रोजर विलियम्स के बारे में बात करने जा रहे हैं। हमने अभी दूसरे दिन उनका उल्लेख किया था, लेकिन अब हमें अमेरिकी ईसाई धर्म में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक के बारे में बात करने की आवश्यकता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मेरा मतलब है, अगर कोई मुझे यह कहने के लिए मजबूर करे कि, आप जानते हैं, मुझे दस या पंद्रह सबसे महत्वपूर्ण नाम बताइए, तो रोजर विलियम्स को सूची में शामिल होना ही होगा। इसमें कोई सवाल ही नहीं है। तो, यह रोजर विलियम्स का एक स्केच है।

अब, हमने कहा कि हम रोजर विलियम्स के बारे में थोड़ा और बताने जा रहे हैं। तो, मैं यहीं, अभी यही करने जा रहा हूँ। तो, ठीक है।

सबसे पहले, रोजर विलियम्स का जन्म लंदन में हुआ था, उनका जन्म इंग्लैंड में हुआ था, और वे एंग्लिकन थे। वे एक अच्छे एंग्लिकन थे, उनका पालन-पोषण इंग्लैंड में एक एंग्लिकन परिवार में हुआ था। हालाँकि, इंग्लैंड में अपने समय के दौरान, वे एक प्यूरिटन बन गए।

वह प्यूरिटन के पक्ष में था। वह एंग्लिकन चर्च को शुद्ध करना चाहता था, दोनों ही मामलों में, उसकी चर्च नीति में, वह एक अधिक सामूहिक प्रकार का चर्च जीवन चाहता था, और उसकी पूजा पद्धति में, वह, अन्य प्यूरिटन की तरह, नहीं चाहता था कि पूजा पद्धति रोमन कैथोलिक पूजा पद्धति बन जाए। वह इसे बाइबिल के अर्थ में सरल बनाना चाहता था।

इसलिए, वह एक प्यूरिटन बन जाता है, और फिर वह बोस्टन आ जाता है, जहाँ उसके साथ प्यूरिटन आप्रवासन बोस्टन और मैसाचुसेट्स बे कॉलोनी में होता है। अब, जब वह बोस्टन में होता है, तो रोजर विलियम्स का बोस्टन के अन्य प्यूरिटन नेताओं के साथ गंभीर टकराव शुरू हो जाता है। टकराव धार्मिक स्वतंत्रता या धार्मिक स्वतंत्रता के मुद्दे पर था।

रोजर विलियम्स का मानना था कि राज्य का सदस्य होने, कॉलोनी का सदस्य होने या समुदाय का सदस्य होने के लिए आपको ईसाई संप्रदाय से संबंधित होने या ईसाई होने की आवश्यकता नहीं है। और, बेशक, हम पहले ही कह चुके हैं कि आप केवल तभी वोट कर सकते हैं जब आप पुरुष हों और केवल तभी जब आप मण्डली के सदस्य हों। इसलिए, राज्य प्राधिकरण द्वारा आप क्या कर सकते हैं, इस पर एक सीमा थी।

रोजर विलियम्स इससे असहमत थे, और वे सिर्फ सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं रखते थे; वे स्वतंत्रता, पूर्ण स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे। इसलिए, उनका अपने अन्य प्यूरिटन नेताओं से टकराव हुआ। इसलिए, उनके लिए एकमात्र काम यही था कि वे बाहर निकल जाएँ।

और इसलिए, वह दक्षिण की ओर जंगल में चला गया, याद है? मैं कहना चाहता हूँ, आप जानते हैं, वह रूट 95 से दक्षिण की ओर रोड आइलैंड में गया, बोस्टन में बोनान्ज़ा बस में चढ़ा, और बोनान्ज़ा बस में प्रोविडेंस में पहुँचा, और उसने रोड आइलैंड की स्थापना की। और, ज़ाहिर है, उसने शहर का नाम रखा, एक बढ़िया तरह का प्यूरिटन नाम, है न? उसने इसका नाम प्रोविडेंस रखा। तो, उसने रोड आइलैंड नामक यह जगह पाई, और शहर को उसने प्रोविडेंस कहा, अपनी बस्ती को उसने प्रोविडेंस कहा।

अब, इस नई जगह, इस नई बस्ती की एक तरह की प्रचलित विशेषता होगी। यह पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता पर आधारित है। और इसलिए, उस धार्मिक स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए, चर्च और राज्य का पृथक्करण होने जा रहा है।

चर्च राज्य को यह नहीं बताएगा कि उसे क्या करना है, और सरकार चर्च को यह नहीं बताएगी कि उसे क्या करना है। और हम इस निरपेक्षता को बनाए रखने जा रहे हैं क्योंकि वह डर गया था; वह अपनी यूरोपीय पृष्ठभूमि से भयभीत था। वह उन जगहों को जानता था जहाँ राज्य चर्च को नियंत्रित करता था, और वह इस बात से भयभीत है कि ऐसा फिर कभी न हो, कि राज्य चर्च को नियंत्रित करे।

इसलिए, वह अपनी कॉलोनी में ऐसा नहीं होने देगा। यह बोस्टन में हो रहा है। वह इससे डरता है।

प्रोविडेंस में ऐसा नहीं होने वाला है, आप जानते हैं? तो, चर्च और राज्य का पृथक्करण। यह बहुत दिलचस्प है कि चर्च और राज्य के पृथक्करण के बारे में शुरूआती चर्चाएँ इस डर पर आधारित थीं कि राज्य चर्च पर शासन करने और चर्च को चलाने जा रहा है। आज, यह दिलचस्प है कि चर्च और राज्य के पृथक्करण की चर्चाओं में, हम इतने डरे हुए हैं कि चर्च का राज्य पर प्रभाव पड़ने वाला है।

हम इसी बात से डरते हैं। इसलिए, हमें यह अलगाव करना होगा ताकि चर्च का राज्य पर यह प्रभाव न हो। इसलिए, चीजें थोड़ी बदल गई हैं।

ठीक है, तो वह प्रोविडेंस में है। वह प्रोविडेंस में बस रहा है और रोड आइलैंड की स्थापना कर रहा है। 1639 में कुछ ऐसा हुआ जिस पर ध्यान देना ज़रूरी है।

1639 में रोजर विलियम्स बैपटिस्ट में शामिल हो गए। कुछ बैपटिस्ट हैं जो इस स्थान पर आए हैं, और वे अपनी पृष्ठभूमि के संदर्भ में मुख्य रूप से अंग्रेजी और वेल्श हैं। वे यूरोप में कुछ उत्पीड़न के अधीन आए थे।

हम बाद में बैपटिस्ट के बारे में बात करेंगे। यूरोप में उन्हें कुछ उत्पीड़न का सामना करना पड़ा था, और इसलिए इस उत्पीड़न से बचने के लिए वे रोड आइलैंड आ गए। मैसाचुसेट्स बे कॉलोनी में उनका स्वागत नहीं किया गया होता, लेकिन वे रोड आइलैंड आ गए, जहाँ उन्हें पता था कि वे जो हैं, उसके लिए स्वतंत्र हैं, और वे चर्च और राज्य के पृथक्करण में विश्वास करते थे।

इसलिए, 1639 में, उन्होंने अमेरिका में पहला बैपटिस्ट चर्च बनाने में उनकी मदद की। इसलिए, अमेरिका में पहला बैपटिस्ट चर्च प्रोविडेंस में है। लेकिन, फिर से, जब आप संरचना को देखते हैं, तो आप उस संरचना को देखकर कहेंगे, वाह, यह थोड़ा अलंकृत लगता है क्योंकि यह साइट पर चौथी संरचना है।

बैपटिस्ट द्वारा बनाई गई मूल संरचना बहुत ही सरल संरचना रही होगी। इसलिए, 1639 में, उन्होंने उन्हें अपना चर्च बनाने में मदद की, और कुछ समय के लिए, रोजर विलियम्स बैपटिस्ट बन गए। इसलिए, थोड़े समय के लिए, वह बैपटिस्ट बन गए, जो बहुत दिलचस्प है।

अब, बैपटिस्टों की वजह से, शायद वहाँ कुछ बैपटिस्ट हैं। मुझे नहीं पता। हम इस लेख के अंत में पता लगाएँगे।

वहाँ बैपटिस्ट हैं। बैपटिस्ट रोजर विलियम्स पर दावा करना पसंद करते हैं। वे उस पर दावा करना पसंद करते हैं।

तो, आप में से कुछ बैपटिस्ट, आपने देखा होगा, शायद आपके चर्च में रोजर विलियम्स की तस्वीरें लगी हों, मुझे नहीं पता, लेकिन आप में से कुछ बैपटिस्ट उन्हें अपना मानते हैं। इससे मूर्ख मत बनिए क्योंकि वह केवल तीन सप्ताह के लिए बैपटिस्ट थे। इसलिए, वह बहुत लंबे समय तक बैपटिस्ट नहीं रहे।

लेकिन वह उन्हें अपना बैपटिस्ट चर्च बनाने में मदद करता है, और उसे बैपटिस्टों से सहानुभूति है, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन जिस तरह से वह इसे समाप्त करता है, उसके बाद क्या होता है? अब, वह अपने शहर प्रोविडेंस और अन्य जगहों पर है। बैपटिस्ट छोड़ने के बाद, रोजर विलियम्स एक साधक बन जाता है।

साधक एक व्यापक शब्द है, जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जिसका कोई विशेष धार्मिक घर या कोई विशेष संप्रदाय नहीं है। और इसलिए, रोजर विलियम्स, अपने जीवन के अंतिम समय में, साधक बन गए। तो, उनका तीर्थ क्या है? वे एंग्लिकन थे, फिर वे प्यूरिटन थे, फिर वे बैपटिस्ट थे, और फिर वे साधक बन गए।

अब, पेरी मिलर ने रोजर विलियम्स की एक बेहतरीन जीवनी लिखी है। दरअसल, मैंने इसे आपकी गर्मियों की पढ़ाई के लिए आपकी किताब में सूचीबद्ध किया है। रोजर विलियम्स पर अपनी किताब में पेरी मिलर ने यह कहा है:

उनका कहना है कि अपने जीवन के अंत में, रोजर विलियम्स को यह विश्वास होने लगा कि दुनिया में केवल दो ईसाई हैं, वह और उसकी पत्नी। और फिर उसे अपनी पत्नी पर संदेह होने लगा। इसलिए, जब आप साधक बन जाते हैं, तो आपको सावधान रहना चाहिए कि यह आपके साथ क्या करता है क्योंकि आप बौद्धिक रूप से यह मानने लगते हैं कि आप ही एकमात्र ईसाई बचे हैं और कोई अन्य ईसाई नहीं बचा है।

तो, एक तरह से, मुझे लगता है, रोजर विलियम्स के साथ भी ऐसा ही हुआ जब वह एक साधक बन गया, सच्चे चर्च की तलाश में। मुझे नहीं लगता कि उसे कभी सच्चा चर्च मिला, लेकिन वह अपने जीवन में उन क्षेत्रों से गुज़रा। ठीक है, चलिए यहाँ रोड आइलैंड का ज़िक्र करते हैं।

नंबर बी, मैं सिर्फ़ रोड आइलैंड का ज़िक्र करूँगा। औपनिवेशिक काल में रोड आइलैंड धार्मिक स्वतंत्रता का महान केंद्र बन गया, धार्मिक स्वतंत्रता का पहला केंद्र। धार्मिक सहिष्णुता नहीं बल्कि धार्मिक स्वतंत्रता।

ठीक है, हम शुक्रवार को इस पर चर्चा करेंगे। आपका दिन शुभ हो। जिन लोगों को कुछ बेहतरीन लेखों की ज़रूरत है या फिर आपको पाठ्यक्रम या किसी और चीज़ की ज़रूरत है, मैं उन्हें दे सकता हूँ।

आपका दिन शुभ हो, और शुक्रवार को आपसे मुलाकात होगी।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 2 है, अमेरिका में प्यूरिटनवाद और रोजर विलियम्स।